

मौन

रघुराज सिंह बहुत खुश थे। उनके लड़के से अपनी लड़की का रिश्ता करने की इच्छा से अजमेर से एक संपन्न एवं सुसंस्कृत परिवार आया था। रघुराज सिंह का लड़का सेना में अधिकारी है। उनके दो अन्य लड़के उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

लड़की के पिता ने रघुराज सिंह से कहा - “हम आपसे एवं आपके परिवार से पूरी तरह संतुष्ट हैं। आप भी हमारी लड़की को देख लें एवं हमारे परिवार के बारे में पूरी जानकारी कर लें।”

रघुराज सिंह ने कहा - “जानकारी लेने की कोई जरूरत नहीं है। हम भी आपसे पूरी तरह संतुष्ट हैं।”

लड़की के पिता ने पूछा - “आपकी कोई माँग हो तो हमें बताने की कृपा करें।”

रघुराज सिंह बोले - “हमारी कोई माँग नहीं है। बस, चाहते हैं, लड़की ऐसी हो जो परिवार में विघटन न कराए। चाहता हूँ, तीनों भाई मिलकर रहें।”

“इससे बढ़कर क्या बात हो सकती है। जब बच्चों को अच्छे संस्कार मिलते हैं तो पूरा परिवार एक सूत्र में बँधा रहता है।” लड़की के पिता ने विनम्रतापूर्वक कहते हुए पूछा - “साहब, आप कितने भाई हैं?”

रघुराज सिंह ने कहा - “तीन भाई, एक बहिन”

लड़की के पिता ने पूछा - “आपके भाई क्या करते हैं?”

रघुराज सिंह - “सबके निजी धंधे हैं।”

लड़की के पिता ने पूछा - “आपने अपने किसी भाई को बुलवाया नहीं?”

रघुराज सिंह झिझकते हुए बोले - “अजी, हम भाइयों में बोलचाल बंद है।”

अचानक वहाँ खामोशी छा गई। प्रश्न और उत्तर दोनों ही मौन थे।

× × ×

× × ×

× × ×

असाधारण

मुझे जोधपुर जाना था। बस आने में देरी थी। अतः बस स्टॉप पर बस के इंतजार में बैठा था। वहाँ बहुत से यात्रियों का जमघट लगा हुआ था।

परिचय

जन्म : १९६६,

परिचय : त्रिलोक सिंह ठकुरेला जी ने कुंडलिया छंद के विकास के लिए अद्वितीय कार्य किया है।

प्रमुख कृतियाँ : ‘नया सवेरा’ (बाल साहित्य), ‘काव्यगंधा’ (कुंडलिया संग्रह), ‘आधुनिक हिंदी लघुकथाएँ’, ‘कुंडलिया छंद के सात हस्ताक्षर’, ‘कुंडलिया कानन’, ‘कुंडलिया संचयन’, ‘समसामयिक हिंदी लघुकथाएँ’, ‘कुंडलिया छंद के नये शिखर’ आदि संपादन।

गद्य संबंधी

यहाँ दो लघुकथाएँ दी गई हैं। प्रथम लघुकथा में त्रिलोक सिंह ठकुरेला जी ने लोगों की कथनी और करनी में अंतर पर करारा प्रहार किया है। दूसरी लघुकथा में आपने एक पॉलिश करने वाले बालक के स्वाभिमान को दर्शाया है। इन लघुकथाओं के माध्यम से लेखक ने संदेश दिया है कि हमारी सोच और व्यवहार में समरूपता होनी चाहिए। स्वाभिमान किसी में भी हो सकता है। हमें सभी के स्वाभिमान का आदर करना चाहिए।

सभी बातों में मशगूल थे अतः अच्छा-खासा शोर हो रहा था ।

अचानक एक आवाज ने मेरा ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया । एक दस वर्षीय लड़का फटा-सा बैग लटकाए निवेदन कर रहा था - “बाबू जी, पॉलिश करा लो ।”

मेरे मना करने पर उसने विनीत मुद्रा में कहा - “बाबू जी, करा लो । जूते चमका दूँगा । अभी तक मेरी बोहनी नहीं हुई है ।”

मैं घर से जूते पॉलिश करके आया था अतः मैंने उसे स्पष्ट मना कर दिया ।

वह दूसरे यात्री के पास जाकर विनय करने लगा । मैं उसी ओर देखने लगा । वह रह-रहकर यात्रियों से अनुनय-विनय कर रहा था - “बाबू जी, पॉलिश करा लो । जूते चमका दूँगा । अभी तक मेरी बोहनी नहीं हुई है ।”

मेरे पास ही एक सज्जन बैठे थे । वे भी उस लड़के को बड़े गौर से देख रहे थे । शायद उन्हें उसपर दया आई । उन्होंने उसे पुकारा तो वह प्रसन्न होकर उनके पास आया और वहीं बैठ गया ।

“बाबू जी, उतारो जूते ।”

उन्होंने कहा- “भाई, पॉलिश नहीं करानी है । ले, यह पाँच रुपये रख ले ।”

“क्यों बाबू जी ?” उसने बड़े भोलेपन से कहा ।

वे सज्जन बड़े प्यार से बोले - “रख ले । तेरी बोहनी नहीं हुई है, इसलिए ।”

लड़का झटके से खड़ा हुआ- “बाबू जी, भिखारी नहीं हूँ । मेहनत करके खाना चाहता हूँ । बिना पॉलिश किए रुपये क्यों लूँ ?” यह कहते हुए वह आगे बढ़ गया ।

पॉलिश करने वाले लड़के के चेहरे पर स्वाभिमान का असाधारण तेज देखकर लोग दंग रह गए ।

(‘समसामयिक हिंदी लघुकथाएँ’ से)

— ० —



“बाल श्रम” पर लगा प्रतिबंध कितना सफल सिद्ध हुआ है, इसकी जानकारी के लिए अपने परिसर का सर्वेक्षण कीजिए । सर्वेक्षण के आधार पर अपनी रपट/ अनुभव लिखिए ।



स्पर्धा के लिए ‘अतिथि देवो भव’ विषय पर भाषण तैयार करके सुनाइए ।



‘संयुक्त परिवार आजकल विघटित होते जा रहे हैं, इसपर जानकारी पढ़कर निबंध लेखन कीजिए ।



रेडियो/दूरदर्शन, यू ट्यूब से राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी) की जानकारी सुनिए ।

शब्द संसार

विघटन सं. पुं. (सं.) = अलग करना

जमघट पुं. सं. (हिं) = भीड़

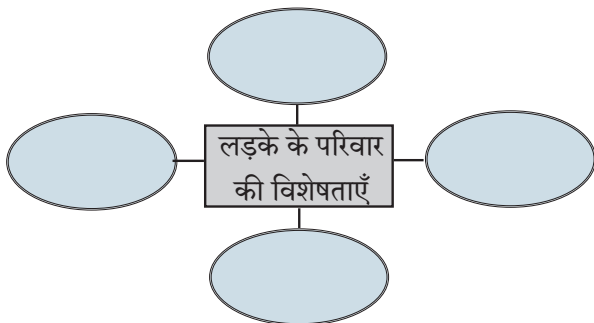
अनुनय पुं. सं. (सं.) = खुशामद, विनय

मुहावरा

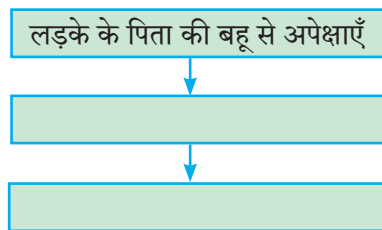
दंग रह जाना = आश्चर्यचकित होना

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :



(२) कृति पूर्ण कीजिए :

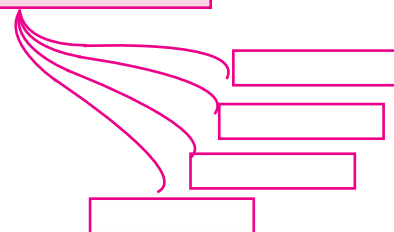


(३) कारण लिखिए :

१. अचानक खामोशी छा गई - -----
२. लड़के के चाचा जी नहीं आए थे - -----
३. लड़के का चेहरा देखकर लोग आश्चर्य करने लगे - -----
४. लड़के ने सज्जन के दिए रुपये लौटाए - -----

(४) लिखिए :

बस स्टॉप का वातावरण



अभिव्यक्ति

‘परिश्रम और स्वाभिमान से जिंदगी बिताने में आनंद की प्राप्ति होती है’
इसपर अपने विचार लिखिए ।

उपयोजित लेखन

वक्तृत्व प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाने के उपलक्ष्य में आपके मित्र/सहेली ने आपको बधाई पत्र भेजा है, उसे धन्यवाद देते हुए निम्न प्रारूप में पत्र लिखिए :

दिनांक :

संबोधन :

अभिवादन :

प्रारंभ :

विषय विवेचन :

तुम्हारा/तुम्हारी,

नाम :

पता :

ई-मेल आईडी :



छंद

छंद ह्रस्व/लघु (I) और दीर्घ/गुरु (S) इन दो स्वरों से संबंधित होते हैं। ह्रस्व (I) तथा दीर्घ (S) को 'मात्रा चिह्न' कहते हैं। व्यंजनों का मेल स्वरों के साथ होता है परंतु स्वररहित व्यंजन में मात्राएँ गिनी नहीं जाती हैं।

- संयुक्त वर्ण के पहले आया हुआ लघु वर्ण भी गुरु होता है।
जैसे-सत्य में 'स' गुरु होगा।
संयुक्त वर्ण की मात्रा लघु होती है।

लघु (I)

दीर्घ (S)

- $S \mid - \overset{S}{\text{र}} + \overset{S}{\text{अ}} + \overset{I}{\text{क्}} + \overset{I}{\text{त्}} + \overset{I}{\text{अ}}$
क्, त् और र मात्रा रहित हैं।
- 'रक्त' में तीन मात्राएँ होंगी।

- $S S \quad S \quad S$
राधा = र् + आ + ध् + आ
- 'राधा' शब्द में चार मात्राएँ होंगी।

ध्यान दें

ध्यान दें

- मात्रा गणना में लघु (I) = १ गिना जाता है।
- अ, इ, उ - इन ह्रस्व स्वरों तथा इससे युक्त एक व्यंजन या संयुक्त व्यंजन को 'लघु' गिना जाता है।
- चंद्रबिंदुवाले ह्रस्व स्वर भी लघु होते हैं।
जैसे - 'अँ'।
- कमल = तीनों वर्ण लघु हों तो मात्रा चिह्न हुए $III = ३$

- आ, ई, ऊ - दीर्घ स्वर और इनसे युक्त व्यंजन गुरु होते हैं।
- ए, ऐ, ओ, औ - ये संयुक्त स्वर और इनसे मिले व्यंजन गुरु होते हैं।
- अनुस्वारयुक्त वर्ण, विसर्गयुक्त वर्ण भी गुरु होते हैं।
- राजा, दीदी के मात्राचिह्न = SS, SS

सोरठा

- यह अर्धसम मात्रिक छंद है।
- इसमें चार चरण होते हैं।
- विषम चरणों में ११-११ मात्राएँ और सम चरणों में १३-१३ मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण

- | | | |
|--------------------------|---|---------------|
| II S I I S S I | } | प्रथम चरण |
| (१) सुनि केवट के बैन, | | = ११ मात्राएँ |
| ११ २११ २ २१ | } | द्वितीय चरण |
| (२) प्रेम लपेटे अटपटे। | | = १३ मात्राएँ |
| SI I S S I I I S | } | तृतीय चरण |
| (३) विहँसे करुणा अयन, | | = ११ मात्राएँ |
| २१ १२२ १११२ | } | चतुर्थ चरण |
| (४) चितइ जानकी लखन तन II | | = १३ मात्राएँ |
| 1 I S I I S I I I | | |
| ११२ ११२ १११ | | |
| 1 I I S I S I I I I | | |
| १११ २१२ १११ ११ | | |